Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 5, July-2018, ISSN 2230-7540

पुस्तकालय वर्तमान में ई-ग्रन्थालय एवं ई लर्निंग उपयोगिता

Mohammed Shakir*

Librarian, Yuva College, Guna

भूमिका – पुस्तकालय का आधार पुस्तक है। पुस्तक शब्द सामान्यतः अर्थ अभिव्यक्ति के समस्त भौतिक माध्यम है। अतः अभिव्यथित्ति के भौतिक माध्यम वर्तमान में ई-पत्रिकाएं, ई-जनरल ने ले ली है। ई-ग्रन्थालय अब विश्व में पुस्तकालय का एक बीज बो दिया है।

प्रारंभ में व्यक्तिगत आवश्यकता, सामाजिक आवश्यकता वर्तमान में पुस्तकों में अपनी जगह अब ई-पुस्तकों ने ले ली। इसके माध्यम से पाठक कम समय में अधिक सुविधा पूर्ण कार्य कर सकती है। कम समय में ज्यादा विश्वस्तरीय जानकारी प्राप्त कर सकता है और इन जानकारी को रखने के लिए ज्यादा जगह की आवश्यकता नहीं पड़ती है और कार्य को शीघ्रता से पूर्ण किया जा सकता है और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि एक ही ई-पुस्तक को एक ही समय पर अलग-अलग कम्प्यूटर के माध्यम से पाटकगण स्वंतत्रसपूर्वक पढ़ सकते है और यदि कोई नयी सेवा या नयी किताबें, पत्रिकाएं कुछ भी नयी जानकारी उस पुस्तक से संबंधित है तो वह भी आसानी सें मिल जाती है।

----------X----------

प्रस्तावना:

वर्तमान युग कम्प्यूटर का युग है। परिणामस्वरूप हम किसी कार्य को शीघ्रता से पूर्ण करने के लिए तत्पर रहते है। आप प्रत्येक व्यक्ति को सूचना या आंकड़ो की आवश्यकता पड़ती है, सूचना प्राप्त करने के दो तरीके है:-

1. **परम्परागत ग्रन्थालय –** जहां पर पाठक अपनी आवश्यकता को चाही गई जानकारी को पुस्तक के माध्यम से एक एक करके सूचना को संग्रहित करता है उसे समय अधिक लगता है और बहुत सारी पुस्तकों को उपयोग करना पड़ता है।

2. **डिजीटल ग्रन्थालय –** पाटक को अपनी आवश्यकता जानकारी शीघ्रता से प्राप्त हो जाती है। पाठक को उन सभी जानकारी प्राप्त करने के लिए म्प्यूटर और उससे संबंधित डिजीटल ग्रन्थालय की कार्य प्रणाली और उससे प्राप्त होने वाले लाभों के बारे में पूरी जानकारी होनी चाहिए। इसलिए उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए कम्प्यूटर और उनसे होने वाले फायदे आदि की जानकारी होनी चाहिए।

ग्रन्थालय एक शिक्षणिक संस्था है, जिसका उद्देश्य समाज को सूचना प्रदान करने की दिशा में मार्गदर्शित करना है। परिवर्तन संसार का नियम है और उसी के परिणाम स्वरूप वर्तमान में ग्रन्थालय ने अपना एक नया रूप ले लिया है। परम्परागत स्वरूप को परिवर्तित कर आधुनिक स्वरूप डिजीटल और ई-ग्रन्थालय। डिजीटल पुस्तकालय उस पुस्तकालय को कहते है जिनकी पठन सामाग्री डिजीटल स्वरूप में होती है और इनकी उत्पत्ति सूचना प्रौद्यौगिकी के परिणाम स्वरूप हुई, जिसे इलेक्ट्रानिक ग्रन्थालय, नेट ग्रन्थालय आदि के नाम से जाना लगा है।

ग्रन्थालय की आवधारणा: ग्रन्थालय की कोई सर्वमान्य परिभाषा उपलब्ध नहीं है। उपयोगकर्ताओं के अनुभव पर इसकी विशेषताओं को परिलक्षित करती है एवं ग्रन्थालय की अवधारणा भी तकनीक के विकास एवं बदलाव के साथ-साथ परिवर्तित होती रहती है। कुछ लोग इसको एक प्रणालीगत विचार से देखते है तो कुछ लोग व्यवसायिक दृष्टिकोण रखते है।

सामान्यतः ग्रन्थालय का आशय वेब के माध्यम सें उपलब्ध लर्निंग है इसी को ग्रन्थालय की संज्ञा दी जाती है। हालांकि ग्रन्थालय में विभिन्न प्रकार की तकनीकों को उपयोग में लाकर

www.ignited.in

इसे उत्पन्न करना एवं स्थानान्तरण करना ग्रन्थालय का हिस्सा है। वेब केवल एक माध्यम है ना कि एक एक मात्र तरीका। इससे कम्प्यूटर आधारित शिक्षण भी किया जा सकता है इस प्रकार ग्रन्थालय को निम्न प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है कम्प्यूटर से संबंधित तकनीक इन्टरनेट एवं टेलीफोनिक चाहे वह संयुक्त रूप से हो या अलग-अलग के द्वारा उत्पन्न एवं प्रसारित शिक्षण।

इस प्रकार ग्रन्थालय के तीन प्रमुख क्षेत्र है।

1. ग्रन्थालय वेब संसाधित है वह ग्रन्थालय है।
2. ग्रन्थालय एक पूर्ण लर्निंग तरीका है।
3. ग्रन्थालय विभिन्न तकनीकियों को मिलाकर प्रस्तुत की जाने वाली पद्धति है।

ग्रन्थालय के माध्यम से पाठ्य वस्तु शिक्षार्थियों को सीखने, प्रशिक्षण या शिक्षा कार्यक्रमों के लिए वेब का उपयोग करते हुए प्रस्तुत किया जाता है। यह ऑनलाइन, मांग पर आधारित या इन्टरेक्टिव हो सकती है। पाठ्य वस्तु प्रबन्धन, विषय वस्तु की प्रस्तुति, उपयोक्तान्मुखी चार दिवारी के रूप में ना रहकर वर्चुअल एवं डिजिटल हो सकता है।

उद्देश्य

1. कम्प्यूटर आधारित प्रशिक्षण पाठ्यक्रम: यह ग्रन्थालय का प्रारंम्भिक रूप माना जाता है। सूचना प्रौद्यौगिकी के उपयोग मे व्यापक विस्तार के साथ ही विभिन्न संगठनो ने अपने कर्मचारीयों केा प्रशिक्षित करने के लिए यह तरीका अपनपाया जिससे साफ्टवेयर आधारित प्रशिक्षण तैयार किया गया एवं कम्प्यूटर की सहायता से प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है इसमें व्यापक रूप से कम्प्युटर आधारित निर्देश हेतु पाठय सामग्री तैयार करने का प्रयोग किया गया है यह पद्धति उपयोग करने में आसान साबित हुई एवं शिक्षार्थी को उपयोग की स्वंतत्रता प्रदान की गई। उपयोगकर्ताओं का मुल्यांकन भी आसान एवं त्वरित हो गया। इस पद्धति में ना केवल पाठय सामग्री बल्कि ग्राफिक्स, ऐनिमेशन एवं मल्टी मीडिया का उपयोग कर शिक्षार्थियों में रूचि उत्पन्न करने तथा विषय को आसानी से समझने में सहायता मिलती है ।
2. वेब आधारित प्रशिक्षण: WBT में CBT के इन्टरनेट प्रारूप में उपलब्धता को जाना जाता है । हालांकि वेब आधारित प्रशिक्षण में कोई भी लर्निंग सामग्री जो कि इन्टरनेट पर उपलब्ध है इसके द्वारा निर्देशित भी किया जा सकता है। वेब आधारित प्रशिक्षण में की सारी विशेषताएं होती है। किन्तु एवं अन्य संसाधनो को उपलब्ध करना एक अन्य पहलू है वर्तमान समय में शिक्षा एंव प्रशिक्षण में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है ।
1. दूरस्थ शिक्षा: दूरस्थ शिक्षा के कारक निम्न प्रकार है:
2. शिक्षण एवं विद्यार्थी भौगोलिक रूप से अलग-अलग स्थानों पर होते है।
3. शैक्षणिक मीडिया, तकनीकी, विधि एवं प्रिन्ट सामग्री का निर्देशात्मक उपयोग।
4. विद्यार्थी एवं शिक्षक के बीच दो तरफा सम्प्रेषण ।
5. सीखने के अवसरो पर शिक्षक के स्थान पर शिक्षार्थी का नियंत्रण।
6. विभिन्न संस्थाओं द्वारा दुरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों की उपलब्धता।
7. परम्परागत विश्वविद्यालयों में दूरस्थ शिक्षा इकाई ।
8. दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के रूप में मुक्त विश्वविद्यालय।
9. ऑनलाइन या वर्चुअल विश्वविद्यालय ।

इन संस्थाओं में नई सूचना संचार प्रौद्योगिकी का व्यापक उपयोग कर (ग्रन्थालय के रूप में) विभिन्न कार्यकमों, पाठ्यसामग्री एवं सम्प्रेषण में लचीलापन लाया जाता है एवं सुगम बनाया जाता है ।

3. उपयोगिता:

कम्प्यूटर की आसान उपलब्धता एवं इन्टरनेट के उपयोग ने शिक्षकों एवं शिक्षार्थियों को एक प्लेटफार्म उपलब्ध करवा दिया है जिससे शिक्षक विद्यार्थियों से एवं विद्यार्थी आपस में सहपाठियों से व्यापक विचार विमर्श कर शिक्षा या प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते है। शिक्षण एवं लर्निंग एक सामाजिक क्रिया के

www.ignited.in

इसके अन्तर्गत 30 अपलिंक स्टेशन उपलब्ध होगें एवं प्रत्येक अपलिंक स्टेशन से 5000 सुदुर टर्मिनल जुडे होंगे। इस प्रकार यह आशा की जाती है कि यह 1,50,000 भूमिगत टर्मिनल्स को सुविधा उपलब्ध कराएगा। अर्थात प्रत्येक ग्राम पंचायत के स्तर के लोग इस सुविधा से लाभान्वित हो सकेंगे। जब यह सुविधा ग्राम के स्तर पर उपलब्ध होगी तो ग्राम शिक्षा केन्द्रो या ज्ञान केन्द्रों का निर्माण होगा, जिससे कि वहाँ के निवासी ज्ञान केन्द्र के माध्यम से विश्वविद्यालयों से जूडें होंगे। स्थानीय रूचि की पुस्तके उपलब्ध होगी, डिजिटल पुस्तकालय में उपलब्ध सामग्री को पढने की सुविधा होगी तथा यह केन्द्र स्थानीय सूचना के संग्रहण केन्द्र क रूप में कार्य करेगा ।

उपसंहार:

वर्तमान समय में बदली हुई आवश्यकता को देखते हुए पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विषय में आवश्यक हो गया है। कि इस विषय में शिक्षा प्रदान करने वाले विभिन्न विश्वविद्यालय अपने पाठ्यक्रम में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर चल रहे बदलाव को ध्यान में रखकर निरन्तर परिवर्तन करें एवं शिक्षार्थी को विभिन्न मीडिया में नवीनतम जानकारी प्रदान करें। इस हेतु यह आवश्यक है कि वे प्रौद्यौगिकी का प्रयोग कर अपने पाठ्यक्रमो की पाठ्य वस्तु, सेवाएं उपयोक्तोन्मुख हो। ग्रन्थालय पद्धति इस तरह की सुविधा प्रदान करती है। इस इकाई में ग्रन्थालय की आवधारणा, ग्रन्थालय के महत्वपूर्ण पक्षों (कम्पोनेन्टस), ग्रन्थालय के लाभ तथा ग्रन्थालय का भविष्य आदि का वर्णन किया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:-

Gupta S.R. Chardhury: Poonam & Verma, Journal of Library & Information Science June Dec.12-15.

Ranganathan, S.R. (1963). Five Laws of Library Science, Bomba, Asia.

Ranganathan, S.R. (1966). Teaching Library Science with Slant to Documentation.

Corresponding Author

Mohammed Shakir*

Librarian, Yuva College, Guna

E-Mail – shakir.mansoori786@gmail.com